ISSN Print: 2664-7699
ISSN Online: 2664-7702
Impact Factor: RJIF 8.53
IJHA 2025; 7(2): 588-594
www.humanitiesjournals.net
Received: 05-12-2025
Accepted: 28-12-2025

कुमारी स्वर्णलता
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
कुमारी स्वर्णलता
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत।

बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और महिला विधायकों की भूमिका–2025 के विधानसभा चुनाव के संदर्भ में

कुमारी स्वर्णलता

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26647699.2025.v7.i2g.263

सारांश
सृष्टि की उत्पत्ति एवं सभ्यता के विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। पुराणों के अनुसार चाहे धर्म की रक्षा हो या उसकी पुर्नस्थापना इन सभी कार्यो को आदि शक्ति माँ जगदम्बा ने ही पूर्ण किया है। सीता, सावित्री के धर्मपालन को आज भी आदर्श के रूप में समाज में माना जाता है। रानी लक्ष्मीबाई, मदरटेरेसा के वीरता बलिदान तथा सेवा की मिशालें आज भी हमारे जीवन को एक दिशा प्रदान करती है। हमारा समाज मूल रूप से पुरूष प्रधान रहा है। पहले महिलाओं के पास किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता न होने के कारण उसकी सामाजिक व पारिवारिक स्थिति एक पराश्रित से अधिक नहीं थी। जिसे हर कदम पर एक पुरूष के सहारे की जरूरत होती थी। वैसे तो आजादी के बाद से ही महिला उत्थान के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास किये जाते रहें है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला सशक्तिकरण की कार्य में तेजी आयी है। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरूप महिलाओं के आत्म विश्वास में बढ़ोत्तरी हुयी है। वे किसी भी चुनौती को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार करने लगी है। एक ओर जहाँ केन्द्र व राज्यों की सरकारें महिला उत्थान की नई–नई योजनायें बनाने लगीं है। वहीं कई गैर सरकारी संगठन भी उनके अधिकारों के लिये उनकी आवाज बुलन्द करने लगें है। महिला में ऐसी प्रबल भावना को उजागर करने का प्रयास भी किया जा रहा है। कि वह अपने अन्दर छिपी की ताकत को सामने लाकर बिना किसी सहारे के आने वाली हर चुनौती का सामना कर सकें।

कूटशब्दः सृष्टि, पुराण, धर्मपालन, बलिदान, सशक्तीकरण, महिला राजनीतिक भागीदारी, बिहार की राजनीति, महिला विधायक, महिला सशक्तिकरण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व।

प्रस्तावना

बिहार में महिलाओं की राजनीति में भागीदारी का इतिहास असाधारण संघर्ष और प्रयासों का परिणाम है। सामाजिक परंपरा एवं स्त्रीविरोधी मान्यताओं के चलते महिलाओं की सशक्त भूमिका सीमित रही है, परन्तु समय के साथ समाज में बदलाव आया है। महिलाओं का राजनीति में प्रवेश वृहद होते गया है, जिसमें पारंपरिक मोर्चों से लेकर नवीनतम राजनीतिक मंचों तक उनका वर्चस्व बढ़ रहा है। वर्तमान में, राज्य में महिला मतदाता की संख्या बढ़ती जा रही है, जो राजनीतिक बहस व चुनावी रणनीतियों का महत्वपूर्ण भाग बन गई है। महिला सशक्तिकरण हेतु विभिन्न सरकारी योजनाएँ व सामाजिक आंदोलन संघर्षरत हैं। इन प्रयासों का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कराना एवं उन्हें राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता का अवसर देना है। बिहार में महिलाओं की भागीदारी का यह प्रवाह शैक्षणिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तरों पर हो रहे परिवर्तनों के साथ मजबूत हो रहा है। महिलाओं की सशक्तिकरण की प्रक्रिया में महिला विधायकों की भूमिका विशेष महत्व की है, जो न केवल लोकहित की योजनाएँ लागू करने में समर्थ हैं बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के केंद्रबिंदु भी हैं। समय–समय पर महिलाओं की संख्या में वृद्धि ने राजनीति में उनका प्रतिनिधित्व बढ़ाया है, जो प्रत्यक्ष रूप से समाज में महिला नेतृत्व का विकास दर्शाता है। इस संदर्भ में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं स्थापत्य बाधाओं के बावजूद बिहार की राजनीतिक संस्कृति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। अतः यह प्रक्रिया सामाजिक सुधारों एवं राजनीतिक जागरूकता का परिणाम है, जो संविधानिक प्रावधानों और समाज के प्रगतिशील सोच के माध्यम से प्रोत्साहित हो रही है। बिहार में महिलाओं को पिछड़ी श्रेणी में माना जाता है। पिछड़े हुए समुदाय में तो और भी पिछड़ा। डॉ. लोहिया के श्रेणीकरण में तो महिलाएं पिछड़ी समुदाय में हैं। वे दलित, अल्पसंख्यक, पिछड़ी और स्त्री जाति को पिछड़ी समुदाय में रखते थे। बिहार जैसे सामंती मानसिकता वाले राज्य में तो महिलाओं को फैसला लेने की आजादी भी नहीं रहती है। ऐसे बिहार में महिलाओं के वोट टर्न आउट का बढ़ जाना बिहार की अनकही कहानी बयां करने के लिए काफी है।

वोट का यह छलांग परंपरागत वर्जनाओं से मुक्ति की ओर छलांग की तरह है। श्रीकांत के अनुसार यह सामाजिक सशक्तीकरण की दिशा में बड़ा कदम है।

वोटर टर्न आउट बढ़ाने में लड़कियों को साइकिल और ग्रामीण क्षेत्रों में आंगनबाड़ी, सर्वशिक्षा अभियान और पढ़ाई की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। संभव है कि पिछड़े हुए समाज में जाति निरपेक्ष वोट डालने वाली महिलाओं की संख्या अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के साथ सशक्तीकरण की नई पहचान स्थापित कर दे। यह बिहार की परंपरागत छवि को नए सिरे से रचने और गढ़ने की ताकत रखता है।

बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का वर्तमान संदर्भ

बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी वर्तमान में धीरे–धीरे कदम बढ़ा रही है, परंतु अभी भी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। महिला वोटरों की संख्या और समाज में उनकी आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक स्थिति में सुधार के चलते मतदाताओं में महिलाओं का रुझान बढ़ रहा है। इसके बावजूद, विधायिका में महिलाओं की हिस्सेदारी अपेक्षाकृत कम है। भारतीय संविधान में स्थापित 33 प्रतिशत महिला आरक्षण के बावजूद, अधिकांश राजनीतिक दल इस शर्त को पूरा करने में संकोच दिखाते हैं। खुले तौर पर प्रतिनिधित्व बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं, किन्तु पदों की संख्या और प्रभावी भूमिका दोनों में अभी भी सुधार की आवश्यकता है।

तालिका 1: बिहार विधानसभा में महिला विधायकों का प्रतिनिधित्व (2005–2025)

वर्ष	महिला विधायक (:)
2005 (फरवरी)	1.2
2005 (अक्टूबर)	10.3
2010	14.0
2015	11.5
2020	10.7
2025	12.0

स्रोतः भारत निर्वाचन आयोग एवं अनुमानित आँकड़े

यह चार्ट दर्शाता है कि समय के साथ महिला विधायकों के प्रतिनिधित्व में वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। राजनीतिक दलों में महिलाओं के लिए टिकट वितरण की नीति मुख्य रूप से परिवारिक और जातीय समीकरणों पर निर्भर रहती है। इससे कई योग्य महिला उम्मीदवारों को मौका नहीं मिल पाता। हालांकि, सरकार और विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा महिला सशक्तिकरण को लेकर कई प्रयास हो रहे हैं, जिनमें प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम भी शामिल हैं। इन प्रयासों का प्रभाव राजनीति में भागीदारी के स्तर को बढ़ाने में सहायक हो रहा है।

सामाजिक धारणा और परंपराओं के कारण महिलाओं का राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश अभी भी सीमित है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में महिलाओं का सहभागिता काफी कम है, जहां पारिवारिक और सामाजिक दबाव उनके ऊपर अधिक होता है। शैक्षणिक संस्थानों और श्रम बाजार में सुधार के साथ–साथ, महिलाओं की आत्म–सम्मान और जागरूकता भी स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी को प्रोत्साहित कर रही है। इस स्थिति में, राजनीतिक जागरूकता और सामाजिक समर्थन के संयोजन की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है।

इस संदर्भ में, बिहार में महिलाओं की भागीदारी एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें नीतिगत सुधार, सामाजिक जागरूकता और दलगत प्रतिबद्धता को स्थापित करना आवश्यक है। यदि प्रभावी कदम उठाए गए, तो अगले वर्षों में महिला प्रतिनिधित्व में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है, जो समाज की समग्र प्रगति में सहायक सिद्ध होगी।

बिहार की राजनीति में महिलाओं की भूमिका हमेशा से ही बहुआयामी रही है। एक ओर जहां महिलाएं मतदाता के रूप में अपनी ताकत दिखा रही हैं, वहीं विधायकों के रूप में उनकी प्रतिनिधित्व अभी भी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव, जो 6 से 11 नवंबर तक चरणबद्ध तरीके से संपन्न हुए, इसकी मिसाल हैं। इस चुनाव में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने 202 सीटें जीतकर भारी बहुमत हासिल किया, लेकिन महिलाओं का योगदान इसमें निर्णायक साबित हुआ। डब्ल्यू हालांकि, निर्वाचित विधायकों में महिलाओं का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से काफी कम रहा।

बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ रही है, खासकर स्थानीय निकायों में 50: आरक्षण के कारण, जिससे पंचायतों में सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं, लेकिन राज्य स्तर पर पितृसत्ता, जातिगत भेदभाव और संसाधनों की कमी जैसी बाधाएँ अभी भी हैं; महिला विधायकों की भूमिका शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, लेकिन उन्हें समर्थन और नीतियों में सुधार की आवश्यकता है ताकि वे केवल 'प्रॉक्सी' न रहकर वास्तविक नेतृत्वकर्ता बन सकें और सत्ता के शीर्ष पदों तक पहुँच सकें।

2025 के चुनाव में कुल मतदाताओं की संख्या में महिलाओं का हिस्सा 48: से अधिक था, और उनका मतदान प्रतिशत पुरुषों से कहीं ज्यादा रहा। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, महिलाओं का मतदान प्रतिशत 71.6: था, जबकि पुरुषों का 62.8:। इससे महिलाओं ने पुरुषों से 4.3 लाख अधिक वोट डाले। यह अंतर पिछले 15 वर्षों में सबसे अधिक था। यह 'महिला लहर' एनडीए की जीत का प्रमुख कारण बनी। जनता दल (यूनाइटेड) को विशेष रूप से महिलाओं के वोटों से फायदा हुआ, क्योंकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की योजनाएं जैसे 'महिला समाहार' और 'कन्या विवाह' जैसी स्कीमें महिलाओं के बीच लोकप्रिय रहीं। एफ कुल 130 विधानसभा क्षेत्रों में महिलाओं के वोट पुरुषों से अधिक पड़े, और इनमें से 88: में एनडीए ने जीत हासिल की।

हालांकि, उच्च मतदान के बावजूद, महिलाओं के उम्मीदवारों की संख्या ऐतिहासिक रूप से कम रही। 2025 में केवल 258 महिलाएं मैदान में उतरीं, जो 15 वर्षों में सबसे कम संख्या है। यह दर्शाता है कि पार्टियां महिलाओं को 'वोट बैंक' तो मानती हैं, लेकिन टिकट वितरण में अभी भी हिचकिचाहट बरतती हैं।

बिहार विधानसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व धीरे–धीरे बढ़ा है, लेकिन यह राष्ट्रीय औसत (लगभग 14:) से कम रहा है। नीचे दिए गए चार्ट में 2005 से 2025 तक के विधानसभा चुनावों में महिला विधायकों की संख्या दिखाई गई है। डेटा एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) और मायनेटा जैसे स्रोतों से लिया गया है।

इस चार्ट से स्पष्ट है कि 2010 में चरम (32 महिलाएं, 13.2:) के बाद संख्या में गिरावट आई, लेकिन 2025 में मामूली सुधार हुआ (29 महिलाएं, 12:)। 2020 में यह 26 (10.7:) था। कुल 243 सीटों में महिलाओं का औसत प्रतिनिधित्व 11: के आसपास रहा, जो पंचायती राज में 50: आरक्षण के विपरीत है।

2025 की 18वीं बिहार विधानसभा में 29 महिला विधायक निर्वाचित हुईं, जो पिछले विधानसभा से 3 अधिक हैं। इनमें से 13 आयु वर्ग 25–39 वर्ष के बीच हैं, जो युवा नेतृत्व का संकेत देता है। हालांकि, 15 के पास कॉलेज डिग्री नहीं है, जो शिक्षा के स्तर पर सवाल उठाता है।

महिला विधायकों ने शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभाई है। उदाहरणस्वरूप, नीतीश कुमार सरकार में महिला विधायक प्रीति कुमारी ने बाल विवाह रोकथाम विधेयक को मजबूत करने में योगदान दिया। 2025 चुनाव में विजयी महिलाओं में बीजेपी की मैथिली ठाकुर जैसी नई चेहरे उभरे, जिन्होंने ग्रामीण विकास पर फोकस किया।

फिर भी, चुनौतियां बरकरार हैं। कई महिला विधायक 'प्रॉक्सी' मानी जाती हैं, जहां पुरुष रिश्तेदारों का प्रभाव हावी रहता है। डी कम टिकट और हिंसा/धमकी जैसे कारक उनकी भागीदारी

सीमित करते हैं। 33: महिला आरक्षण विधेयक के पारित होने से उम्मीद है कि भविष्य में सुधार होगा।

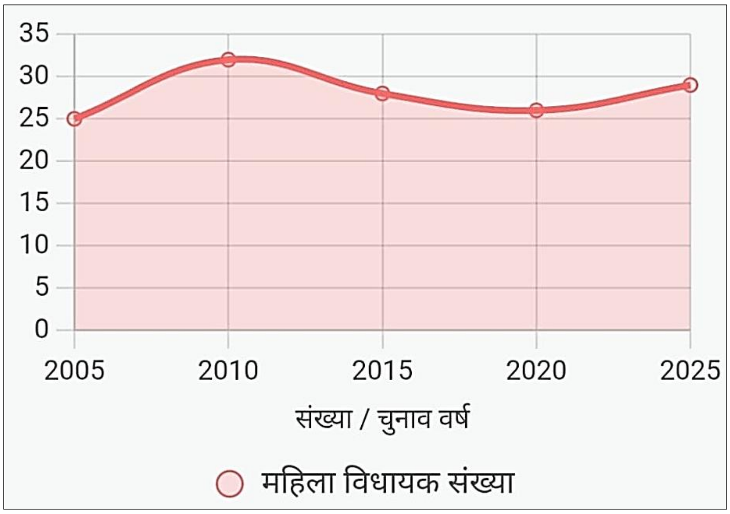

सारणी: 2005 से 2025 के बीच बिहार विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या में हुए उतारदृचढ़ाव और समग्र प्रवृत्ति को दर्शाती है।

2020 और 2025 विधानसभा चुनाव के बीच के बदलाव

2020 में हुई बिहार विधानसभा चुनाव के बाद से महिला प्रतिनिधित्व में सकारात्मक बदलाव देखने को मिले हैं। चुनाव प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी के महत्व को समझते हुए कई राजनीतिक दलों ने महिला प्रत्याशियों को प्राथमिकता दी। इससे न केवल महिला उम्मीदवारों को राजनीति में स्थापित करने का अवसर मिला, बल्कि उनकी चुनावी सफलता की संभावनाएं भी बढ़ीं। विशेष रूप से, 2020 के विधानसभा चुनाव में महिलाओं ने विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक समूहों का नेतृत्व संभाला, जिससे समाज में उनका स्थान स्थिर हुआ। सरकार और राजनीतिक दलों ने महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, नीतिगत स्तर पर महिला उम्मीदवारों के लिए विविध योजनाओं और टिकट उपायों का पालन किया।

तलिका 2: बिहार विधानसभा चुनाव 2020 और 2025 में मतदाता भागीदारी

विधानसभा चुनाव 2020 में मतदाता की भागीदारी		विधानसभा चुनाव 2025 में मतदाता की भागीदारी	
पुरुष	54.6:	पुरुष	62.8:
महिला	59.7:	महिला	71.6:

स्रोत: भारत निर्वाचन आयोग एवं अनुमानित आँकड़े

महिला मतदाताओं की भागीदारी पुरुषों से अधिक रही, जो बढ़ती राजनीतिक जागरूकता को दर्शाती है। आंकड़ों में भी व्यापक वृद्धि देखने को मिली 2020 में कुल विधायकों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 10 प्रतिशत रहा, जो इससे पहले की अवधि से अधिक था। वहीं, 2025 के चुनाव में 12 प्रतिशत हुई है, जो महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को मजबूत करने का संकेत है। इस अवधि में, युवा महिलाओं और शैक्षिक प्रवृत्तियों वाले वर्गों में खासा उत्साह देखा गया है, जिनमें राजनीति की ओर रुझान बढ़ा है। इससे न केवल महिला उम्मीदवारों की संख्या में वृद्धि हुई है, बल्कि उनका निर्वाचन भी सुनिश्चित हुआ है, जिससे उनके प्रभाव का क्षेत्र और भी व्यापक हुआ है।

इस बदलाव का कारण सामाजिक जागरूकता, शिक्षा का प्रसार, तथा मतदान व्यवहार में परिवर्तन भी है। सरकारी पहल और सामाजिक आंदोलन महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनुकूल वातावरण निर्मित कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं का राजनीतिक नेतृत्व अधिक सुदृढ़ हो रहा है। हालांकि, अभी भी चुनौतियां बरकरार हैं, परन्तु इन बदलावों ने बिहार में महिलाओं की राजनीति में भागीदारी को नई दिशा दी है, जो दीर्घकालिक सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का संकेत है।

2025 बिहार विधानसभा चुनाव (6–11 नवंबर) में कुल 255 महिलाएं उम्मीदवार थीं, जो 15 वर्षों में सबसे कम संख्या है। फिर भी, 29 महिलाएं (12:) जीतीं, जो 2020 के 26 (11:) से थोड़ा बेहतर है। मतदान में महिलाओं की भागीदारी रिकॉर्ड तोड़ीः कुल मतदान 66.91: रहा, जिसमें महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों से 9: अधिक था। कम से कम 130 विधानसभा क्षेत्रों में महिलाओं ने पुरुषों को पछाड़ा, जहां एनडीए ने 114 जीते।

पार्टी–वार ब्रेकडाउन (महिला विधायक)

- **एनडीए:** अधिकांश महिलाएं यहां से जीतीं, खासकर बीजेपी (लगभग 12) और जेडीयू (लगभग 10) से।
- **आरजेडी:** 5–6 महिलाएं।
- **अन्य:** एआईएमआईएम और कांग्रेस से 2–3।

महिलाओं की वोटिंग ने नीतीश कुमार की योजनाओं (जैसे मुफ्त बिजली, सिलेंडर सब्सिडी) को मजबूत किया, जिससे एनडीए को 202 सीटें मिलीं।

प्रमुख महिला विधायक और उनके योगदान

नाम	निर्वाचन क्षेत्र	पार्टी	विशिष्ट योगदान/भूमिका
मैथिली ठाकुर	अलीनगर (दरभंगा)	भाजपा	बिहार की सबसे युवा विधायक। लोकगायिका के रूप में प्रसिद्ध, युवाओं और महिलाओं से जुड़े मुद्दों (शिक्षा, संस्कृति) पर फोकस। मैथिली भाषा और मिथिला संस्कृति को विधानसभा में प्रमुखता दी। शपथ मैथिली में ली।
श्रेयसी सिंह	जमुई	भाजपा	अंतरराष्ट्रीय निशानेबाज। खेल और महिला सशक्तिकरण पर जोर। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सुविधाओं के विकास में योगदान। एनडीए की जीत में महिला वोटों को मजबूत करने वाली प्रमुख चेहरा।
रेणु देवी	बेतिया	भाजपा	पूर्व उपमुख्यमंत्री। महिला कल्याण योजनाओं (जैसे जीविका समूह) के क्रियान्वयन में अनुभव। पश्चिम चंपारण में विकास कार्यों पर सक्रिय।
कोमल सिंह	गायघाट	जदयू	सबसे कम उम्र की विधायकों में से एक। परिवारिक राजनीतिक पृष्ठभूमि (मां सांसद)। प्रचार में बुलेट राइडिंग से चर्चा। युवा महिलाओं के रोजगार और शिक्षा पर फोकस।
रेखा पासवान	सारण	लोजपा	पार्टी की मजबूत स्ट्राइक रेट में योगदान। ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण और स्थानीय विकास पर सक्रिय।
गायत्री देवी	परिहार	भाजपा	क्षेत्रीय विकास और महिला मुद्दों पर कार्य।
नीशा सिंह	प्राणपुर	भाजपा	स्थानीय स्तर पर महिला समूहों को मज करने में भूमिका।

समग्र योगदान के क्षेत्र

- **कैबिनेट में प्रतिनिधित्वः** नई सरकार में श्रेयसी सिंह, लेशी सिंह और एक अन्य महिला मंत्री शामिल। ये महिला–केंद्रित योजनाओं (जैसे जीविका, सात निश्चय) के बेहतर कार्यान्वयन में भूमिका निभा रही हैं।
- **महिला वोटरों का प्रभावः** महिला विधायकों ने एनडीए की जीत में अप्रत्यक्ष योगदान दिया, क्योंकि महिलाओं का टर्नआउट पुरुषों से अधिक रहा और नीतीश की योजनाओं ने उन्हें आकर्षित किया।
- **युवा नेतृत्वः** मैथिली ठाकुर जैसी युवा विधायक संस्कृति, शिक्षा और युवा रोजगार पर नई बहस छेड़ रही हैं।
- **विपक्षी भूमिकाः** आरजेडी की 3 महिला विधायक (नाम स्पष्ट नहीं, लेकिन सामान्यतः लैंगिक हिंसा और शिक्षा पर सक्रिय) सदन में विपक्षी आवाज उठा रही हैं।

सकारात्मक लोकतंत्र के निर्माण के लिए जरूरी है कि राजनीति में ज़्यादा से ज़्यादा महिलाओं का योगदान हो। क्योंकि महिलाएं गरीबी, समानता और समाज के विकास जैसे मुद्दों को अच्छी तरह समझती हैं और उन्हें हल करने में भी मदद कर सकती हैं। इसलिए उन्हें राजनीति में बराबरी का अवसर मिलना ही चाहिए। हमें उम्मीद है कि अगले बिहार चुनाव में पार्टियां अपनी महिला उम्मीदवारों को अधिक से अधिक अवसर देंगी।
चुनौतियां और आगेः हालांकि संख्या कम है, ये विधायक 33ः महिला आरक्षण बिल की वकालत कर रही हैं। कई 'प्रॉक्सी' नहीं बल्कि स्वतंत्र छवि वाली हैं, जो बिहार की राजनीति में बदलाव का संकेत है।

समाजिक संरचना, शिक्षा और भागीदारी पर प्रभाव

बिहार की सामाजिक संरचना में पारंपरिक मान्यताएँ और जातिगत पहचान की मजबूत छवि महिलाओं की स्वतंत्र एवं सक्रिय भागीदारी को सीमित करने का प्रयास करती हैं। जाति, धर्म और लिंग के आधार पर विभाजन राजनीतिक स्तर पर भी स्पष्ट दिखाई देते हैं, जहां महिलाओं के लिए प्रतिनिधित्व सीमित होता है। इन सामाजिक मान्यताओं का प्रभाव महिलाओं की शिक्षा और स्वरूप के विकास पर भी देखा जाता है। शिक्षा का अभाव तथा सामाजिक प्रतिबंध बालिकाओं को प्राइमरी से ही सार्वजनिक जीवन में सक्रिय प्रतिभागिता से दूर रखता है, जिससे राजनीतिक जागरूकता और नेतृत्व क्षमता का क्षरण होता है। बावजूद इसके, समाज में बदलाव की हवाएँ उठ रही हैं। महिलाओं की शिक्षा में सुधार और जागरूकता अभियानों के माध्यम से उनकी भागीदारी का स्तर उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। विभिन्न महिला केंद्रित कार्यक्रम और सरकारी योजनाएँ महिलाओं को राजनीति में प्रवेश का अवसर प्रदान कर रही हैं, जिससे उनके सामाजिक स्वरूप का संवर्द्धन होता है। महिला निर्वाचित सदस्यों की संख्या में वृद्धि इन नीतियों का परिणाम है, जो यह दर्शाती है कि सामाजिक ढाँचे में आवश्यक परिवर्तन हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप, महिलाओं का राजनीतिक क्षेत्र में योगदान न केवल अनिवार्य हो गया है बल्कि उनकी भूमिका में भी स्थिरता और विस्तार पाया है। इन सबसे मिलकर, समाज एवं शिक्षा में सुधार का प्रभाव भागीदारी को प्रोत्साहित करता है, जिससे महिलाओं के स्वाभाविक अधिकारों एवं सामाजिक सम्मान में वृद्धि के साथ–साथ संसदीय कार्यों में भी उनको प्रभावी स्थान प्राप्त हो रहा है।

विपक्षी नीतियाँ और सामाजिक प्रभाव

विपक्षी दलों की नीतियाँ और उनके सामाजिक प्रभाव बिहार की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विपक्षी दल अक्सर महिला सशक्तिकरण और समानता के संदर्भ में अपनी नीतियों का समर्थन करते हुए, सामाजिक जागरूकता और चेतना का प्रसार करते हैं। इसके माध्यम से वे महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने के प्रयासों को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे समाज में महिलाओं के प्रति सकारात्मक धारणा बनती है। हालांकि, कई बार विपक्षी दलों की नीतियाँ महिला हितों को पहचानने और लागू करने में व्यावहारिक चुनौतियों का सामना करती हैं। सामाजिक स्तर पर इन नीतियों का प्रभाव व्यापक स्तर पर देखा जाता है, जहां जागरूकता के अभाव, परंपरागत सोच और सामाजिक भेदभाव जैसे कारकों के कारण महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता सीमित रह जाती है।
सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करें तो, विपक्षी दलों की नीतियों का संवेदनशीलता एवं समावेशन धीरे–धीरे बदलाव लाता है, लेकिन उनमें स्थिरता और पूरी पूर्णता अभी भी आवश्यक है। कई बार इन नीतियों का उपयोग राजनीतिक लाभ प्राप्ति के लिए भी किया जाता है, जिससे सामाजिक बदलाव के स्थान पर संक्रमण और भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। बिहार जैसे प्रदेश में, जहां परंपरागत मान्यताएँ मजबूत हैं, विपक्षी दलों की नीतियों का प्रभाव समय के साथ ही गहरा होता है, यह सामाजिक जागरूकता और समानता दोनों को लक्षित करता है। कुल मिलाकर, विपक्षी नीतियों का समाज पर मिश्रित प्रभाव है, जो सकारात्मक बदलाव के लिए प्रेरित करते हुए, सामाजिक बाधाओं को भी उजागर करता है। इनके प्रभाव को दृढ़ बनाने के लिए सतत प्रयास और व्यापक सामाजिक प्रोग्रामों की आवश्यकता है, ताकि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित हो सके और समाज की पूरी भागीदारी का उद्देश्य हासिल किया जा सके।

मीडिया, प्रचार और महिलाओं की आवाज

मीडिया का प्रभाव महिलाओं की राजनीति एवं उनकी आवाज को सक्रिय बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज में महिलाओं के राजनीतिक साक्षरता और भागीदारी की दिशा में

मीडिया एक प्रभावी माध्यम है, जिसमें समाचार पत्र, टीवी एवं डिजिटल प्लेटफार्म शामिल हैं। सही जानकारी तथा महिला नेतृत्व की सफलता की कहानियों का प्रसार महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाता है तथा उन्हें राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है। साथ ही, मीडिया महिला नेताओं के संकटपूर्ण अनुभव एवं चुनौतियों को उजागर कर जागरूकता बढ़ाता है, जिससे सामाजिक धारणा में बदलाव आ सकता है। इसके माध्यम से महिलाओं की समस्या और उनके हितों की प्राथमिकता सामाजिक विमर्श का हिस्सा बनने लगती है।

प्रचार एवं मीडिया में महिलाओं को प्रतिनिधित्व एवं आवाज देने का प्रयास राजनीतिज्ञों एवं सामाजिक संगठनों द्वारा किया जाता है। विशेष परिस्थितियों में लक्षित कार्यक्रम और अभियानों के माध्यम से महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता एवं नेतृत्व कौशल को प्रोत्साहन मिलता है। सार्वजनिक मंचों पर महिलाओं की सक्रियता बढ़ाने के लिए मीडिया का संदर्भ महत्वपूर्ण है, जिससे उनका समर्थन और प्रतिनिधित्व मजबूत होता है।

यह भी जरूरी है कि मीडिया महिलाओं की आवाज को आत्मसात् करते हुए सामाजिक परिवर्तन की दिशा में कार्य करे। इससे न केवल महिला नेताओं को सम्मान एवं मान्यता मिलती है, बल्कि समाज में लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता भी फैलती है। प्रभावी मीडिया प्रचार से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में व्यावहारिक बदलाव संभव है। इस प्रक्रिया में डिजिटल मीडिया का प्रयोग विशेष रूप से कारगर सिद्ध हो रहा है, जो व्यापक दर्शकों तक पहुंचा सकता है और आत्म–सम्मान एवं सहभागिता के स्तर को ऊंचा कर सकता है। अन्ततः, मीडिया का उद्देश्य महिलाओं के हितों के संरक्षण के साथ–साथ उनकी आवाज को मजबूत बनाना एवं समाज में समावेशिता को बढ़ावा देना है।

सफल मॉडल और उदाहरण

बिहार में महिलाओं की राजनीति में भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई सफल मॉडल और उदाहरण स्थापित हुए हैं, जिन्होंने न केवल महिला सशक्तिकरण का माध्यम बनाया है, बल्कि व्यापक सामाजिक बदलावों में भी योगदान दिया है। इनमें सर्वप्रथम, जदयू या भाजपा जैसी प्रमुख राजनीतिक दलों ने महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों पर प्रत्याशियों को मौका देकर उनकी भागीदारी सुनिश्चित की है। इनके अलावा, तृणमूल जैसी क्षेत्रीय पार्टी ने महिला मतदाताओं और नेताओं के बीच मजबूत संबंध स्थापित कर अपनी राजनीति का आधार मजबूत किया है। इनके विशेष उदाहरण के रूप में, बक्सर, गया, मुजफ्फरपुर जिले के महिला नेतृत्व वाले संगठन और समूहें सामने आए हैं, जिन्होंने अपनी सक्रियता और जागरूकता के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सामाजिक आंदोलन भी महिला राजनीति के विकास में सहायक सिद्ध हुए हैं। "स्वराज अभियान" जैसी पहलें, जिसमें महिलाओं को नेतृत्व और निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी का अवसर मिला है, ने उनके स्वावलंबन और आत्मविश्वास में वृद्धि की है। वहीं, विभिन्न ट्रेनिंग कार्यक्रम, जैसे कि ष्महिला नेतृत्व विकासष कार्यशालाएँ, महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी के लिए प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से आयोजित की जाती हैं, जिन्होंने युवाओं, दलित महिलाओं और पिछड़ी वर्ग की महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया है। इसी के माध्यम से चिह्नित उदाहरण हैं, जो स्पष्ट संकेत देते हैं कि सही रणनीति और संसाधनों के समावेश से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में निश्चित ही बढ़ोतरी हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, कुछ लोकप्रियता प्राप्त महिला नेताओं ने अपने कार्यकाल के दौरान अपनी योग्यता और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है। उदाहरण के तौर पर, वंदना कुमारी जैसी महिला विधायिका जिन्होंने अपने क्षेत्र में ग्रामीण विकास, शिक्षितीकरण और सामाजिक सुधारों के लिए उल्लेखनीय प्रयास किए हैं। उनके प्रयासों से पता चलता है कि महिला नेतृत्व न केवल प्रमाणित कर रहा है बल्कि समाज में बदलाव का प्रेरक भी बन रहा है। ये सभी मॉडल एक–दूसरे से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ रहे हैं, और इनसे सीख लेकर अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को समान रूप में प्रोत्साहित किया जा सकता है।

इस प्रकार, बिहार में सफल मॉडल और उदाहरण यह दर्शाते हैं कि समर्पित प्रयास, संसाधन और सामाजिक जागरूकता से महिलाओं की राजनीति में भागीदारी को मजबूत किया जा सकता है। यह न केवल महिलाओं के राजनीतिक सफर को आसान बनाता है, बल्कि समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक परिवर्तन भी लाता है।

चुनौतियाँ और समाधान की दिशा

बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में अनेक जटिलताएँ एवं चुनौतियाँ व्याहम हैं, जिनके समाधान के लिए सटीक रणनीतियों एवं संवेदनशील प्रयासों की आवश्यकता है। सबसे प्रधान बाधा समाज में व्याप्त रूढ़ीवादी सोच एवं लिंग आधारित भेदभाव है, जो महिलाओं की सशक्त भूमिका को लगातार रोक रहा है। परंपरागत मान्यताओं के कारण महिलाओं को राजनीति के क्षेत्र में उभरने का अवसर कम ही मिलता है। साथ ही, शिक्षा एवं जागरूकता की कमी भी महिलाओं की भागीदारी को सीमित बनाती है। गरीबी और सामाजिक पिछड़ापन भी एक बड़ी चुनौती है, जिससे वे अपना पदभार संभालने के लिए आवश्यक संसाधनों एवं समर्थन से वंचित रह जाती हैं।

समस्याओं का समाधान हेतु पहले आवश्यक है, समाज में मौजूद धारणा एवं रूढ़ियों को तोड़ना। इसके लिए शिक्षा और जागरूकता अभियानों का विस्तार करना अनिवार्य है, ताकि महिलाओं में आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमताओं का विकास हो सके। नीति स्तर पर पारदर्शी आवंटन एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित प्रावधानों का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है। साथ ही, स्थानीय स्तर पर मंडल एवं जनप्रतिनिधि योजनाओं के माध्यम से महिला समर्थक कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि महिलाओं को राजनीति में आने के लिए आवश्यक संसाधन एवं मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

सामाजिक संरचना एवं पारिवारिक समर्थन भी महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने में भूमिका निभाते हैं। शिक्षित एवं जागरूक महिलाओं की संख्या बढ़ने से राजनीतिक सहभागिता की संभावना भी सुधरती है। इस दिशा में चलाई गई विभिन्न योजनाएँ एवं सफल मॉडल सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जिनसे प्रेरणा लेकर स्थायी परिवर्तन संभव है। मीडिया का प्रभाव एवं प्रचार–प्रसार इन प्रयासों को जनमानस तक पहुँचाने में सहायता कर रहे हैं, जिससे महिलाओं की आवाज बुलंद हो रही है।

इन सभी प्रयासों के बीच, चुनौतियों का समाधान खोजना आवश्यक है ताकि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए समाज में सकारात्मक बदलाव लाने, समुचित संसाधनों का वितरण, तथा महिलाओं के संरक्षण एवं प्रोत्साहन के लिए रणनीतियों का सृजन करना अत्यंत आवश्यक है। यदि इन दिशा–निर्देशों का पालन एवं क्रियान्वयन सुनिश्चित किया गया, तो बिहार के राजनीतिक परिदृश्य में महिलाओं का सशक्त स्थान स्थापन संभव है।

निष्कर्ष

2025 चुनाव ने साबित किया कि बिहार की महिलाएं राजनीतिक परिवर्तन की धुरी हैं, लेकिन विधायिका में उनकी भूमिका को मजबूत करने के लिए पार्टियों को अधिक टिकट और समर्थन देना होगा। उच्च मतदान महिलाओं की जागरूकता दर्शाता है, लेकिन 12ः प्रतिनिधित्व असमानता को उजागर करता है। यदि

यह प्रवृत्ति जारी रही, तो बिहार की राजनीति अधिक समावेशी बनेगी। स्रोतों के अनुसार, अगले चुनावों में महिला आरक्षण का प्रभाव दिखेगा।

बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की स्थिति में समय के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जिनके प्रभावी परिणाम भी दृष्टिगत हो रहे हैं। महिला उम्मीदवारों और विधायकों की संख्या में वृद्धि से समाज में महिलाओं तक पहुंचने और उनकी आवाज को सार्वजनिक मंच पर स्थापित करने का अवसर मिला है। हालांकि, पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ और सैद्धांतिक बाधाएँ अभी भी महिलाओं की सत्तारूढ़ स्थिति को प्रभावित कर रही हैं। इसके बावजूद, नीति निर्धारण और सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को राजनीति में प्रभावी भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा रहा है। विभिन्न मंडल और नीतिगत स्तर पर महिलाओं के लिए विशेष योजनाएँ लागू की गई हैं, जिनसे उनकी उपस्थिति में सुधार हो रहा है। साथ ही, शिक्षा का अभाव, पारिवारिक और सामाजिक दबाव जैसी चुनौतियों का सामना करने के लिए जागरूकता अभियान और प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए गए हैं। मीडिया तथा प्रचार माध्यम महिलाओं की आवाज को मंच प्रदान कर रहे हैं, जिससे उनकी भागीदारी और पहचान मजबूत हो रही है।

वर्तमान में बिहार में महिला विधायक समाज के विभिन्न तबकों का प्रतिनिधित्व कर रही हैं, जो अपने क्षेत्रों में विकास, स्वच्छता, स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर उल्लेखनीय काम कर रही हैं। इन महिलाओं की भूमिका में चुनौतियाँ तो हैं, परन्तु सकारात्मक बदलाव की दिशा में निरंतर प्रयास जारी हैं। अनेक सफल उदाहरण और मॉडल्स हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि दृढ़ संकल्प और सही नीति के माध्यम से महिला नेतृत्व को मजबूत बनाया जा सकता है। हालांकि, आर्थिक, सामाजिक और नैतिक बाधाएँ अभी भी कायम हैं, जिनसे निपटने के लिए प्रभावी समाधान आवश्यक हैं। इन चुनौतियों का समाधान महिलाओं की शिक्षा, स्वावलंबन, सामाजिक समावेशन और सशक्तिकरण के आधारभूत स्तंभों को मजबूत कर ही संभव है। अतः पूर्व की तुलना में राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं के बढ़ते योगदान और उनकी भूमिका विकास का अहम संकेत हैं, जो समग्र समाज के सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीकांत, राज और समाज, वाणी प्रकाशन, न्यू दिल्ली, 2012, पृ. 23
2. डा. दिलीप कुमार, सामाजिक बदलाव और बिहार, जानकी प्रकाशन, पटना, 2015
3. चेताशी, वर्ष 13, अंक–1, पृ.39 अक्टूबर–दिसम्बर 2016,
4. आशुतोष कुमार, "डेवलापमेंट फोकस एण्ड इलेकट्रोरल सक्सेस पैट द स्टेट लेवल : नीतीश कुमार पैज बिहार्स लीर्डस', साउथ एशिया रिर्सच, वाल्यूम 33, न.2, सेज पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, 2013, पृ. 106–107.
5. अर्णव मुखर्जी एण्ड अंजन मुखर्जी, "सुशासन : गवर्नेस एण्ड द न्यू बिहार", इन एन.के. सिंह (एडीटेड), द न्यू बिहार, पेंनग्यून, न्यू दिल्ली, 2013
6. क्रिसटोफे जेफरलॉट एण्ड जी. वर्नियर, "द रेसिसेंटस ऑफ रिजनलिज्म बीजेपीज् लिमिटेशन्स एण्ड रिसौलियन्स ऑफ स्टेट पॉलिटिक्स", इन पॉल वालास (एडीटेड) इंडियाज 2014 इलेक्शन्स, सेज पबिलकेशन, न्यू दिल्ली, 2014, पृ. 28–45. :
7. अन्ना जुहॉस, "एनालिसिस ऑफ द लेजिसलेटिव एसेम्बली इलेक्शन्स इन बिहार 2015", इंस्टिट्यूट फॉर फॉरेन अफेयर्स एण्ड ट्रेड, ई–2015/45, बुगपेस्ट, 2015
8. कश्मीरा सिंह, 'बिहार में जंगलराज की वापसी", चेतासी, वर्ष 13, अंक–1, अक्टूबर–दिसम्बर 2016, पृ. 16–17
9. सिन्हा, शोभना. पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारीः बिहार का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ पब्लिक अफेयर्स, वॉल्यूम। 20, नहीं. 4, 2020, पीपी. ए 2151
10. झा, अरविन्द कुमार। महिला सशक्तिकरण और पंचायती राजः बिहार में एक अध्ययन। जर्नल ऑफ सोशल वेलफेयर एंड मैनेजमेंट, वॉल्यूम। 6, नहीं. 2, 2014, पृ. 131–141.
11. चौधरी, माधुरी और नीतू सिंह। बिहार में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका। जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, वॉल्यूम। 24, नहीं. 1, 2016, पृ. 45–58.
12. महिला जन अधिकार समिति. पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरणः बिहार का एक केस स्टडी। मानविकी और सामाजिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 6, नहीं. 8, 2016, पृ. 91–1041
13. पांडे, अनुराग. बिहार में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारीः एक सिंहावलोकन। जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट एंड एग्रीकल्चर, वॉल्यूम । 1, नहीं. 2, 2017, पृ. 37–44.
14. रानी, सुषमा. बिहार में पंचायती राज संस्थानों में महिलाओं का प्रतिनिधित्वः एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़, वॉल्यूम। 5, नहीं. 3, 2018, पृ. 123–130.
15. वर्मा, रेखा, (2021), मीडिया और महिला सशक्तिकरण : एक विश्लेषण, जनसंचार अध्ययन जर्नल, 10(1), 67–791
16. राष्ट्रीय महिला आयोग, (2020), राजनीति में महिलाओं की भागीदारी पर रिपोर्ट, नई दिल्ली : एनसीडब्ल्यूआई
17. यादव, संगीता, (2016), भारतीय लोकतंत्र में महिला प्रतिनिधित्व. वाराणसी : भारत अध्ययन प्रकाशन।
18. मिश्रा, राजेश, (2018), भारतीय लोकतंत्र और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन।
19. शर्मा, सीमा, (2019), बिहार में महिलाओं की चुनावी भागीदारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, समाज और राजनीति, 12(3), 89–1011
20. योजना आयोग (2014), महिला विकास और राजनीतिक भागीदारी पर रिपोर्ट, नई दिल्लीः भारत सरकार।
21. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, (2020), लैंगिक समानता और लोकतांत्रिक अधिकार, नई दिल्ली : एनएचआरसीआई
22. भारत निर्वाचन आयोग. (2021). बिहार विधानसभा चुनाव 2020: सांख्यिकीय रिपोर्ट. नई दिल्लीः भारत निर्वाचन आयोग।
23. भारत सरकार. (2019). महिला सशक्तिकरण हेतु सरकारी योजनाएँ. नई दिल्लीः महिला एवं बाल विकास मंत्रालय।
24. कुमार, अरुण. (2018). भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
25. सिंह, मीरा. (2020). बिहार में महिला राजनीतिक भागीदारीः चुनौतियाँ और संभावनाएँ. भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका, 45(2), 112–125।
26. पांडेय, शशि भूषण. (2017). बिहार की सामाजिक संरचना और राजनीति. पटनाः ग्रंथशिल्पी प्रकाशन।
27. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (न्छक्च). (2015). भारत में लैंगिक समानता और राजनीतिक भागीदारी. नई दिल्लीः न्छक्च भारत।
28. महिला अध्ययन केंद्र. (2019). पंचायती राज और महिला नेतृत्व. पटनाः बिहार महिला अध्ययन संस्थान।
29. वर्मा, रेखा. (2021). मीडिया और महिला सशक्तिकरणः एक विश्लेषण. जनसंचार अध्ययन जर्नल, 10(1), 67–79।
30. राष्ट्रीय महिला आयोग. (2020). राजनीति में महिलाओं की भागीदारी पर रिपोर्ट. नई दिल्लीः छँ।
31. यादव, संगीता. (2016). भारतीय लोकतंत्र में महिला प्रतिनिधित्व. वाराणसीरू भारत अध्ययन प्रकाशन।

32. मिश्रा, राजेश. (2018). भारतीय लोकतंत्र और महिला सशक्तिकरण. नई दिल्लीः राधा पब्लिकेशन।
33. शर्मा, सीमा. (2019). बिहार में महिलाओं की चुनावी भागीदारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन. समाज और राजनीति, 12(3), 89–101।
34. योजना आयोग. (2014). महिला विकास और राजनीतिक भागीदारी पर रिपोर्ट. नई दिल्लीः भारत सरकार।
35. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग. (2020). लैंगिक समानता और लोकतांत्रिक अधिकार. नई दिल्लीरू छभ्त्ब्।
36. चौधरी, नीलम. (2017). ग्रामीण भारत में महिला नेतृत्व. जयपुररू रावत पब्लिकेशन।
37. दत्ता, अंजलि. (2021). भारतीय राज्यों में महिला विधायकों की भूमिका. राजनीतिक अध्ययन जर्नल, 18(1), 55–70।